(1)

BA-III
मैथिली प्रतिष्ठा
पत्र - पाँच
मैथिली साहित्य इतिहास

प्रो० रंजीत कुमार राम
(अतिथि व्याख्याता) (G/T)
मैथिली विभाग
V.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (LNMU)

Topic- उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'क खण्डकाव्य "संन्यासी"

संन्यासी मुख्य छन्दक एक सुविचारित कृति थिक जे शिवपुरक शिवनाथ आ सरलाक जीवनक मर्म-स्पर्शी कथाक आधारपर लिखल करैछ जे संन्यासीक जीवनक अपेक्षा गृहस्थक जीवनक उच्चतर थिक। सब सम्भावित सांसारिक सम्बन्धक त्यागक विरुद्ध पारिवारिक जीवनक-यापनक पक्षक ई तर्क थिक। बहुत प्रारम्भहिमे शिवनाथ प्रतिज्ञा करैछ जे ओ बिआह नहि करत; मुदा वयोवृद्धा माताक आदेशपर सरलाक संग विवाह करबाक लेल ओ मानि जाइत अछि। ओ आवेगशीलताक पीड़ित अछि ओ बहुतो वर्षधरि वैवाहिक जीवन बिता अनिर्णयक शिकार बनि जाइछ। तधरि सरला गर्भवती बनि गेल छलीह। एही बीच शिवनाथक माय सेहो चलि गेलाह आ ओ असगर(आ) बनि गेल। फलतः ओ संन्यासी ग्रहण करैछ आ हिमालयक आसपासक तीर्थस्थान सभमे

घुमि-घुमि तप करय लागल। एहि मध्य अभागिन सरला अन्दरसँ मनोव्यथा आ बाहरसँ सामाजिक दोषारोपण सहबाक लेल अभिशप्त छलीह। अपन पिताक घरक अपमानसँ विक्षुब्ध परित्यक्ता नायिका अपन स्वामीक स्थानके चलि अयलीह जतय ओ अन्तहीन दुःख कटबाक लेल बाध्य छलीह। सामाजिक दबावमे परम्पराक अनुसार लापता शिवनाथक श्राद्ध निष्पादित होइत अछि। कथाक ई चरमसीमा थिक। ई एकटा मजाक थिक जे बारह साल बितला पर कोनो जीवित व्यक्तिकेँ मृत मानि ओकर श्राद्ध कऽ देल जाए आ परिवारपर दान-दहेजक संग भोजभातक भार लादि देल जाए। टीकाक अनुसार - "सन्यासी मे अंग्रेजी-शिल्पक प्रयोग अछि आ ई सर्गबद्ध नहि लिखल गेल अछि। एहि मध्य शिवनाथक वैराग्यभाव, घर छोड़ि हिमालय चल जायब तथा कर्ममार्गक महत्वक ज्ञान भेला पर ओहि ठामसँ पुनः परिवारमे घुरि अएबाक कथा वर्णित भेल अछि। ओतऽ तरसैत घुरैत छथि जखन विरह-वेदना सहैत सहैत हुनक पत्नीक अन्त-समय सन्निकट छल। अतः एकर अन्त दुःखान्त अछि। आधुनिक कविक भावुकता काव्यकेँ मर्मस्पर्शी बनऔने छथि। एहिमे

कवि समाजक धार्मिक रूढ़िगत आस्थाक आलोचना करैत छथि। निम्नलिखित पाँती द्रष्टव्य थिक:-

धर्मक नामे होइछ एतए अधर्म,
ई समाजक कुरीतिमे एकर महत्व।
हृदयहीन, निर्मोह अपन अस्तित्व,
राखए हेतु करए कत अत्याचार।। आदि।।

"जखन शिवनाथ चौधरी जाइत अछि आ एकटा गृहस्थक रूपमे परिवर्तित होइछ तँ कथा एकटा विचित्र मोड़ लए लैत अछि। ओ जान बचएबाक लेल दौड़ैत अछि अपन प्रेयसी पत्नीक लग, मुदा ओकरा मृत्यु-शय्यापर पड़ल पबैत अछि तथा ओ आब खाली शवयात्रामे सम्मिलित भए सकैछ। कथाक दुःखद अन्त बड़ हृदयद्रावक अछि। काव्य आजुक युगक संदर्भमे एहन जीर्ण-शीर्ण धूमिल प्रथाक दिवालियापनकेँ देखार करैत अछि। प्रमुख पात्रक मनोवैज्ञानिक अंकन काव्य रचनाकेँ एकटा नव आयाम दैत अछि।

Samyjit Kumar
20/07/20